कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

DOWNLOAD MISSION GYAN APP
कक्षा 10
eकक्षा By Mission Gyan
YouTube
भारत और समकालीन विश्व - 2
अध्याय–3
भूमंडलीकृत विश्व का बनना
NCERT
19वीं सदी के आखिर में उपनिवेशवाद
RBSE
Jinender Soni
Founder - Mission Gyan

उन्नीसवीं सदी के आखिर में उपनिवेशवाद

- 19वीं सदी के आखिरी दशकों में व्यापार बढ़ा और बाजार तेजी से फैलने लगे।
- लेकिन इसका एक स्याह पक्ष भी था।
- व्यापार में वृद्धि और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ चलने की होड़ में दुनिया के बहुत सारे भागों में स्वतंत्रता और रोजगार छिनने लगे।
- यूरोपीयों की अनेक स्थान पर विजय हुई जिससे बहुत सारे कष्टदायक परिवर्तन आये। जैसे – आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिस्थितिकीय।
- इसी के साथ औपनिवेशिक समाजों को विश्व अर्थव्यवस्था में समाहित कर लिया गया।

19वीं सदी के आखिर में औपनिवेशिक अफ्रीका का मानचित्र

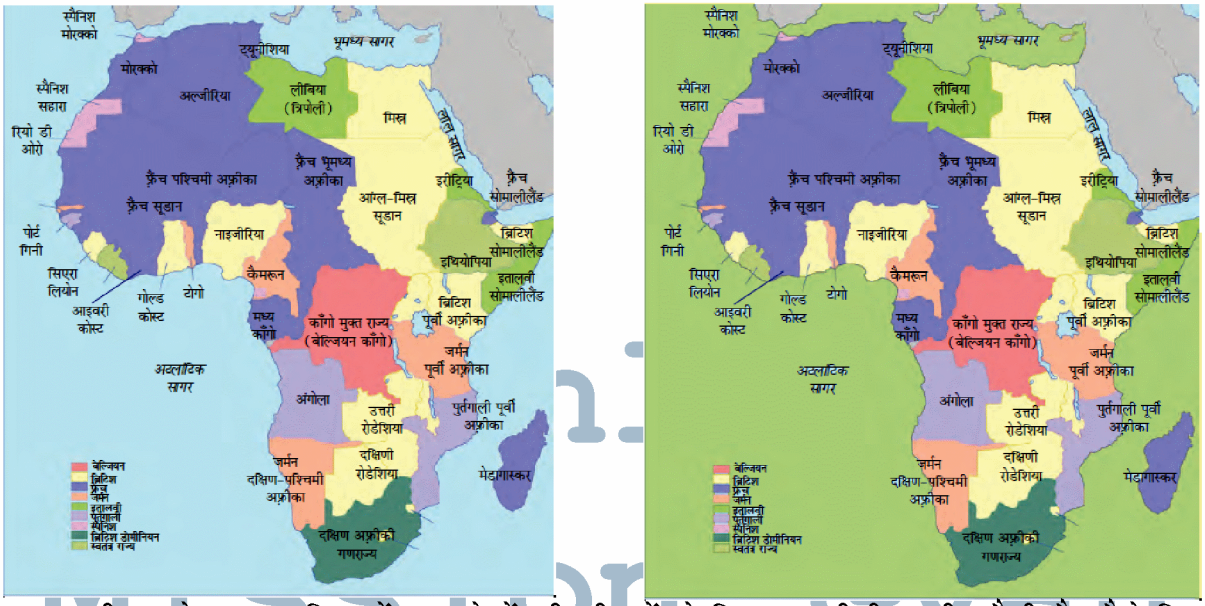

- अफ्रीका के इस मानचित्र में कुछ देशों की सीमाऐं तो बिल्कुल सीधी लकीर जैसी है। जैसे कि मानों उन्हें स्केल रखकर खींचा गया है।
- दुर्भाग्यवश यही हुआ भी था।
- अफ्रीका पर कब्जे की कोशिश में लगी यूरोपीय ताकतों ने अपने अपने इलाके बांटने के लिए इसी तरीके का सहारा लिया था।

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 1885 के यूरोप के ताकतवर देशों की बर्लिन में एक बैठक हुई जिसमें अफ्रीका के नक्शे पर इसी तरह से लकीरें खींचकर उसे आपस में बांट लिया गया था।
- 19वीं सदी के आखिर में ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने शासन वाले विदेशी क्षेत्रफल में भारी वृद्धि कर ली थी।
- बेल्जियम और जर्मनी नयी औपनिवेशिक ताकतों के रूप में सामने आये।
- 1890 के दशक में अमेरिका भी स्पेन के कब्जे वाले कुछ उपनिवेशों पर कब्जा करके नई औपनिवेशिक ताकत बन गया था।



मध्य अफ्रीका में सर हेनरी मॉर्टन स्टैनली और उनकी टोली – इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज, 1871

- स्टैनली एक पत्रकार व खोजी थे।
- न्यूयार्क हेराल्ड ने उन्हें कई साल पहले अफ्रीका गये लिविंग्स्टन नामक मिशनरी को खोजने के लिए भेजा था।
- उस जमाने के अन्य यूरोपीय और अमेरिकी अन्वेषकों की भाँति स्टैनली भी हथियारों से लैस होकर गये थे।
- उन्होंने वहाँ जाकर स्थानीय शिकारियों, योद्धाओं और मजदूरों को इकट्ठा किया तथा स्थानीय कबीलों के साथ लडाइयाँ लड़ी।
- अफ्रीकी भूदृश्य की पड़ताल की तथा विभिन्न इलाकों के नक्शे बनाये।
- बाद में इन खोजों और अन्वेषणों से अफ्रीका को जीतने में मदद मिली।
- अत: ऐसे भौगोलिक अन्वेषण केवल वैज्ञानिक जानकारियां इकट्ठी करने के लिए नहीं होते थे। इनका साम्राज्यवादी योजनाओं से सीधा संबंध होता था।

उपनिवेशवाद से औपनिवेशिक समाजों की अर्थव्यवस्था तथा रोजी-रोटी पर प्रभाव

रिंडरपेस्ट या मवेशी प्लेग :-

- अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी तेजी से फैल गयी।
- मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा।
- इस उदाहरण से पता चलता है कि हमलों और विजयों के इस युग में दुर्घटनावश फैली मवेशियों की बीमारी ने हजारों लोगों का जीवन व भाग्य बदल कर रख दिया।
- प्राचीन काल से ही अफ्रीका में जमीन की कोई कमी नहीं रही तथा वहां की आबादी भी बहुत कम थी।
- सदियों तक अफ्रीकियों की जिंदगी व आजीविका जमीन और पालतू पशुओं के सहारे ही चलती रही।
- वहां पैसे या वेतन पर काम करने का चलन नहीं था। क्योंकि वेतन पर काम करने की जरूरत ही नहीं

Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

थी।

- 19वीं सदी के आखिर में यूरोपीय ताकतें अफ्रीका के विशाल भूक्षेत्र और खनिज भंडारों को देखकर इसकी ओर आकर्षित हुई।
- यूरोपीय लोग अफ्रीका में बागानी खेती करना तथा खदानों का दोहन कर यूरोप ले जाना चाहते थे।
- लेकिन वहां एक ऐसी समस्या पेश आई जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। वहां के लोग वेतन पर काम नहीं करना चाहते थे।
- मजदूरों की भर्ती और उन्हें अपने पास रोके रखने के लिए मालिकों ने बहुत सारे हथकंडे आजमा कर देख लिये लेकिन बात नहीं बनी।
- उन पर भारी भरकम कर लाद दिये गये जिनका भुगतान केवल तभी किया जा सकता था जब वे बागानों या खदानों में काम करें।
- काश्तकारों की जमीन छीनने के लिए उत्तराधिकार कानून बदल दिया गया।
- नये कानून के अनुसार अब परिवार के केवल एक ही सदस्य को पैतृक संपत्ति मिलेगी।
- इस कानून ने परिवार के बाकी सदस्यों को श्रम बाजार में ढकेलने का प्रयास किया।
- खानकर्मियों को बाडों में बंद कर दिया गया। उनके खुलेआम घूमने फिरने पर पाबंदी लगा दी गयी।
- तभी वहां रिंडरपेस्ट नामक विनाशकारी पशु रोग फैल गया।

रिंडरपेस्ट

- अफ्रीका में रिंडरपेस्ट (मवेशी प्लेग) नाम की बीमारी सबसे पहले 1880 के दशक के आखिरी सालों में दिखाई दी।
- उस समय पूर्वी अफ्रीका में एरिट्रिया पर हमला कर रहे इतावली सैनिकों का पेट भरने के लिए एशियाई देशों से जानवर लाये जाते थे।
- यह बीमारी ऐशियाई देशों से आये उन्हीं जानवरों के जरिये यहां पहुंची थी।
- अफ्रीका के पूर्वी हिस्से से दाखिल होने वाली यह बीमारी 'जंगल की आग' की तरह पश्चिमी अफ्रीका की तरफ बढ़ने लगी।
- 1892 में यह अफ्रीका के अटलांटिक तट तक जा पहुंची।
- 5 साल बाद यह केप (अफ्रीका का धुर दक्षिणी हिस्सा) तक भी पहुंच गई।
- रिंडरपेस्ट ने अपने रास्ते में आने वाले 90 प्रतिशत मवेशियों को मौत की नींद सुला दिया।
- पशुओं के खत्म हो जाने से तो अफ्रीकियों के रोजी रोटी के साधन ही खत्म हो गये।
- अपनी सत्ता को और मजबूत करने तथा अफ्रीकियों को श्रम बाजार में ढकेलने के लिए वहां के बागान-मालिकों, खान मालिकों तथा औपनिवेशिक सरकारों ने बचे खुचे पशु भी अपने कब्जे में ले लिये।
- इन बचे हुए पशुओं को कब्जे से यूरोपीय उपनिवेशकारों को पूरे अफ्रीका को जीतने व गुलाम बना लेने का बेहतरीन मौका हाथ लग गया था।
- 19वीं सदी में यूरोपीय देशों द्वारा दुनिया के अनेक भागों पर आक्रमण कर विजय प्राप्त करने की अनेक कहानियां देखी जा सकती है।

LET'S LEARN TOGETHER
Download
Mission Gyan
App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

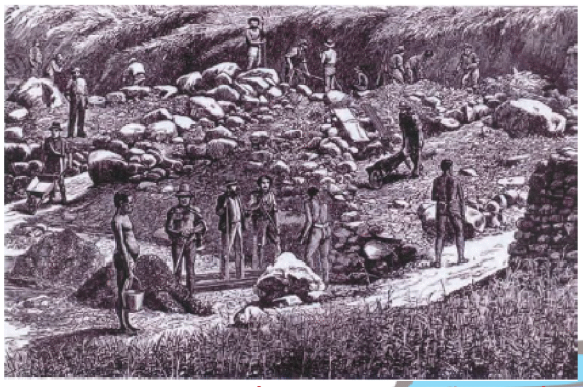

दक्षिणी अफ्रीका के ट्रांसवाल स्वर्ण खदानों में खुदाई करते मजदूर : द ग्राफिक, 1875



ट्रांसवाल स्वर्ण खानों तक आवागमन, द ग्राफिक, 1887

- विल्ज नदी को पार कर ट्रांसवाल की सोना खदानों तक पहुंचने का सबसे छोटा और आसान रास्ता था।
- विट्वॉटर्सरेंड् में सोने की खोज के बाद तो बीमारियों और मौत की आंशका होने के साथ साथ रास्ते की कठिनाइयों के बावजूद यूरोप के लोग उस इलाके की ओर दौड़ पड़े।
- 1890 के दशक तक आते आते दुनिया भर के सोना उत्पादन में अफ्रीका का हिस्सा 20 प्रतिशत से ऊपर जा चुका है।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here